दबगर समाज का इतिहास

निबंध लेखन(प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता का लेख)

देवड़ा तनिषा कनुभाई (कपड़वंज, जिला- खेड़ा, गुजरात)

नोट- यह मूल निबंध गुजराती भाषा का, हिंदी अनुवाद/Google Translate है. इस निबंध को प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मिला है. इसे बड़े धैर्य और समय निकालकर पढ़ने की जरूरत है.

दबगर समाज का इतिहास

- મારું નામ દેવડા તનિષા કનુભાઈ છે. હું કપડવંજ શહેરમાં રહું છું. અત્યારે હું પંચમહાલ જીલ્લાનાં શહેરા તાલુકાનાં અણીયાદ ગામમાં B.SC Nursing નો અભ્યાસ કરું છું. અને અત્યારે હાલ હું છેલ્લાં વર્ષમાં એટલે કે 4th year માં છું....
....

- मेरा नाम देवड़ा तनिषा कनुभाई है। मैं कपडवंज शहर में रहती हूँ. फिलहाल मैं पंचमहल जिले के शहेरा तालुका के अनियाद गांव में बीएससी नर्सिंग की पढ़ाई कर रही हूं। और अब मैं आखिरी साल यानी चौथे साल में हूं.

- हमारे समाज में तरह-तरह की प्रतियोगिताएं होती रहती हैं। जिसमें आज मैं एक निबंध लिखने जा रही हूं. जिसमें मैं अपनी बात कहने जा रही हूं. और मेरे विषय का नाम है "दबगर समाज का इतिहास"। आप हमारे समाज और उसके इतिहास के बारे में तो जानते ही होंगे, लेकिन मैं आपको हमारे समाज के इतिहास के बारे में थोड़ा और बताऊंगी।

परिचय

- हमारा भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। हमारे भारत में विभिन्न जाति- धर्म के लोग रहते हैं। इसलिए भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिख, पारसी, जैन, ईसाई, ब्राह्मण आदि विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं। जो हिंदी, गुजराती, बंगाली, मराठी, मलयालम, पंजाबी, तमिल, तेलुगु आदि विभिन्न भाषाएं बोलते हैं। और भारत देश की खासियत यह है कि यहां इतनी अलग-अलग जातियों के लोगों का निवास होने के बावजूद यहां सभी जाति- धर्म के लोगों की उपस्थिति, आज भी पूरे विश्व में प्रमुख स्थान रखती है। और ऐसे धर्मनिरपेक्ष देश में सभी जाति के लोग एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहते हैं.

- अगर हम अपने समाज 'दबगर समाज' की बात करें तो हमारा दबगर समाज *क्षत्रिय संप्रदाय* से आता है।और मुख्य बात यह है कि हमारे दबगर समाज की पहचान बहुत प्रसिद्ध नहीं है क्योंकि अपने दबगर समाज के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं।

कुछ लोग दबगर समाज के बारे में जानते होंगे या जानकारी रखते होंगे। खास बात यह है कि सोशल मीडिया पर भी दबगर समाज के बारे में रिसर्च करना या दबगर जाति के बारे में जानना, इसका इतिहास जानना, बहुत मुश्किल है।

- समय के साथ-साथ हमारा समाज, रेस में पीछे दौड़ते घोड़े की तरह आगे बढ़ रहा है। वर्तमान की बात करें तो राम मंदिर निर्माण का फैसला 500 साल बाद आया, और हमारे दबगर समाज ने अयोध्या के इस भव्य राम मंदिर में बहुत बड़ा योगदान दिया है। जिसमें दबगर जाति के लोगों ने अपना गौरव दिखाया और अपने हाथ से बनाया गया 500 किलो का अद्भुत नगाड़ा बनाया. जो पूरी दुनिया में मशहूर हो गया है. इस अमूल्य योगदान से हमारे समाज का डंका बजा है।जिसके कारण आज हमारा समाज को सभी लोग पहचानने लगे हैं। लेकिन ये शुरुआत है. हम भविष्य में भी ऐसे ही कार्यों से, ऐसी ही प्रगति से अपने दबगर समाज का नाम रोशन करते रहेंगे।

दबगर समाज की उत्पत्ति

- आप लोग सोच रहे होंगे कि ये दबगर शब्द किससे बना या कैसे लिया गया ? शायद ही हम में से , कोई- कोई जानते हैं।

- दबगर शब्द 'संस्कृत' भाषा से लिया गया है। इसका मतलब है "चम्मच के आकार का बर्तन बनाने वाला" यानी पहले से ही डबगर चमड़े यानी गाय के चमड़े से विभिन्न वस्तुएं बनाने के लिए

प्रसिद्ध है।जो इनकी अनोखी पहचान है. और दबगर समाज इसी मान्यता और इसी महानता के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है।

- पहले के समय में डबगर के चमड़े से पतवारों को आकार देकर नावें बनाई जाती थीं। ऐतिहासिक ग्रंथों के अनुसार हमारी जाति के लोग राजा-महाराजाओं के यहाँ युद्ध के लिये ढाल बनाने के लिये प्रसिद्ध थे। इसलिए दबगर जाति को 'ढलगर' भी कहा जाता है।

- कुछ जगहों पर हमें, डबगर ,दबगर , डफगर, आदि नामों से भी जाना जाता है। डबगर मूल रूप से राजस्थान में, चमड़े से ढाल बनाने के लिए जाने जाते थे।और ये राजा-महाराजाओं के समय में सैनिक हुआ करते थे। राजस्थान हमारे इस कार्य के लिए प्रसिद्ध दबगर समाज की मातृभूमि है।

- अब दबगर समाज के इतिहास के बारे में-

सभी को यह भी नहीं पता कि दबगर समाज के लोग पहले क्या थे?

- वे क्या कर रहे थे?
- दबगर समाज ने हमारे देश के लिए क्या किया है?

- तो आइए जानते हैं दबगर समाज के इतिहास के बारे में। हम दबगर समाज से हैं और हमें इसके बारे में थोड़ी सी भी जानकारी नहीं है तो यह शर्म की बात है। तो आइये...

- दबगर जाति के लोग कई साल पहले सैनिक थे। उन्होंने मुगलों का विरोध करने की शपथ (प्रतिज्ञा)ली। इस युद्ध में उन्होंने खूब संघर्ष किया। लेकिन वे युद्ध में हार गए और हार गए। बाद में इन विदेशी आक्रमणों ने राजाओं के राजपाट को छिन्न-भिन्न कर दिया। जिसके कारण दबगर जाति के लोग विभिन्न राज्यों के जंगलों में भाग गये और भूमिहीन हो गये। फिर वे उस जंगल से केंदु वृक्ष के पत्ते तोड़ते थे और उनसे बीड़ी बनाते थे। और इन बीड़ियों को बेचकर अपनी जीविका चलाते थे। और उनका यह बीड़ी बनाने का उद्योग प्रसिद्ध हो गया।

- इस अप्रत्याशित हार के बाद ,कुछ दबगर लोगों ने, मुग़लों के दबाव में आकर और मृत्यु के डर से, इस्लाम धर्म अपना लिया। और बाद में ऐसे लोगों को 'मुस्लिम दबगर' के नाम से जाना जाने लगा।

लेकिन दबगर समाज का एक बड़ा वर्ग, झुका नहीं, और वे अंत तक हिंदू धर्म छोड़े नहीं. जो बाद में, 'हिंदू दबगर' कहलाए। जो वर्तमान में, हमलोग हैं।

- दबगर जाति के लोग भारत के गुजरात, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र , मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में पाए जाते हैं। यह क्षत्रिय वंश की एक हिंदू जाति है।

गुजरात राज्य को अन्य पिछड़ा वर्ग का दर्जा प्राप्त है लेकिन कुछ राज्यों में उन्हें अनुसूचित जाति का दर्जा भी प्राप्त है।

- ઐતિહાસિક શાસ્ત્રોનાં અનુસાર ડબગર જાતિનાં લોકો રાજા - મહારાજાઓનાં ત્યાં યુદ્ધ કરવાં માટે યુદ્ધમાં વપરાતાં ઢાલ બનાવતાં હતાં. આ ઢાલ બનાવવા માં ડબગર જાતિ બહુ મશહૂર હતી. તેથી ડબગર જાતિને 'ઢાલગર' નામથી ઓળખવામાં આવતી હતી. રાજસ્થાન માં આપણી સમાજનાં લોકોને 'ઢાલગર' નામથી જ ઓળખતાં હતાં......

- ऐतिहासिक ग्रंथों के अनुसार दबगर जाति के लोग वहां के राजा-महाराजाओं के लिए युद्ध में इस्तेमाल होने वाली ढालें बनाते थे। इन ढालों को बनाने में दबगर जाति बहुत प्रसिद्ध थी। इसलिए दबगर जाति को 'धालगर' के नाम से जाना जाता था। राजस्थान में हमारे समाज के लोग 'ढालगर' नाम से जाने जाते थे।

- परिस्थितियों के अनुसार, दबगर जाति के लोग तितर-बितर हो गए। कुछ लोग जंगल में भाग गये। कुछ लोगों ने राजस्थान में किले बनाने में मदद की। कुछ लोगों ने हिंदू धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म अपना लिया। तो कुछ लोगों ने अपनी जाति भी बदल ली. इन सभी कारणों से हमारे समाज से जाति ख़त्म होने लगी। और जो जंगल में भाग गए.उनमें से कुछ जंगल से केदुनी के पत्ते तोड़ते थे और उनसे बीड़ी बनाते थे। लोगों ने इस पेशे को परंपरागत रूप से जारी रखा और बहुत संघर्ष के बाद हमारी दबगर जाति बीड़ी बनाने के उद्योग के कारण प्रसिद्ध हो गई।

निवास/ बसावट (पर्यावास)

- दबगर शब्द कैसे बना है ये तो हम सब जानते हैं। और यह भी जाना कि दबगर समाज के लोग पहले क्या थे और कैसे बंटे हुए थे? आइए अब जानते हैं उनकी बस्ती (निवास स्थान) के बारे में जहां दबगर समाज के लोग रहते थे।

- दबगर समुदाय के लोग भारत के अन्य राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में पाए जाते हैं। और ये अब भी देखने को मिलता है. विदेशी आक्रमणों से पराजित होकर दबगर जाति जंगलों में भाग गयी। और भूमिहीन हो गये. उनमें से कुछ बुन्देलखण्ड के जंगलों में चले गये। और धीरे-धीरे उत्तर प्रदेश के दोआब क्षेत्रों तक फैल गये। कुछ लोग झारखंड के चौपारण में आकर बस गये. इसके अलावा वे लोग भूमिहीन बने रहे और अपने पारंपरिक व्यवसायों से संघर्ष करते रहे।
- कुछ लोग पूर्वी अफ्रीका और यूनाइटेड किंगडम में भी जाकर बस गये।

- राजस्थान में रहने वाले दबगर खुद को राजपूत बताते हैं। और मुख्यत: ये मारवाड़ क्षेत्र में पाए जाते हैं। और वे मारवाड़ी भाषा बोलते हैं.और हिंदी भी समझते हैं. इनकी मातृभूमि राजस्थान है। इस समुदाय के लोग पहले से ही राजस्थान के किलों के

निर्माण में भोजन का अमूल्य योगदान दे रहे थे। और चूँकि वे राजस्थान में ही रहते हैं, इसलिए कहा जा सकता है कि राजस्थान इस समुदाय की 'जन्मस्थली' है।

- अब गुजरात में रहने वाले दबगरों की बात करें तो राजस्थान के बाद, इस समुदाय का प्रारंभिक निवास (निवास) वडोदरा जिले के पावागढ़ में था। अपनी परंपरा के अनुसार मुस्लिम आक्रमण के कारण वे वडोदरा से भाग गये। और अब वे मुख्य रूप से दबगर अहमदाबाद, सारनागपुर जिले में कम संख्या में पाए जाते हैं। सूरत और वडोदरा में भी पाया जाता है। गुजरात में रहकर ये डबगर पहले के समय में ढोल, नगाड़ा , खंजरी, मंजीरा आदि वाद्ययंत्र बनाते थे। और अब भी करते हैं. और पूरी दुनिया में मशहूर है.

घर का माहौल

- जहां तक दबगर समाज के लोगों की किस्मत की बात है तो मामला कुछ अलग है। दबगर समाज के लोग अपने जीवन में हमेशा खुश रहते हैं।भले ही उन पर एक बड़ी आपदा आ गई हो, वे सभी चुनौती का सामना करने के लिए एक साथ आते हैं।

- खास बात यह है कि इनके परिवार वालों के बीच असीम प्यार है। अगर पिता अपने काम से देर से आते हैं तो भी सभी एक साथ बैठते हैं, यानी रात में उनके बच्चे और उनकी पत्नी घर के मुख्य सदस्य के इंतजार में बैठे रहते हैं।और आने के बाद ही

खाना खाने बैठते हैं. इतना प्यार है कि सब एक साथ खाना खाते हैं और दिन भर में जो कुछ भी होता है या होता है सबको बताते हैं और सबके साथ बातचीत करके एक-दूसरे को समझते हैं। पापा कहते हैं कि अगर मुझे रात में देर हो जाए तो तुम सब खाना खा लेना । हर परिवार में ऐसा प्रेम और सद्भाव होना चाहिए।

- आज के आधुनिक युग में हर किसी के पास सबकुछ है। लेकिन लोगों के पास समय नहीं है. जो हर कोई नहीं दे सकता. लेकिन मुझे यह कहते हुए गर्व है कि हमारे समाज में लोग समय को बहुत महत्व देते हैं। और यह वह अनमोल समय है जिसे हर कोई अपने परिवार के सदस्यों को समर्पित करता है। और छोटे बच्चों से लेकर घर के बड़े बुजुर्ग भी इस शब्द का आदर करते हैं। मुझे परिवार के सदस्यों का यह आपसी प्रेम, असीम स्नेह बहुत पसंद है। दबगर समाज के लोग एक-दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। अगर दूसरे समाज के लोगों को आधी रात को भी मदद की जरूरत हो तो हमारे समाज का कोई भी नागरिक ऐसा नहीं है जो उनकी मदद के लिए खड़ा न हो. वह अपनी तरफ से पूरी कोशिश करता है.

- दबगर समाज के लोग अन्य जाति के लोगों के साथ-साथ अपने परिवार के सदस्यों के साथ भी रहते और व्यवहार करते हैं। दबगर समाज के लोग वर्तमान में कोई दुकान, कोई नौकरी, कोई सिलाई, कोई मजदूरी करके अपना जीवन यापन कर रहे हैं। फिर भी वे इतने आनंद से रहते हैं मानो उनके घर में "कंचन वरसे मेघ" अर्थात सोना बरस रहा हो।

- दबगर समाज के लोग अपना जीवन बहुत ही सरल और सरल तरीके से जीते हैं। और संस्कार शब्द उनकी विरासत से बना है. छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक में समर्पण, उदारता, विनम्रता, आदर, ये सब भावना देखने को मिलती है।

- हमारे समाज के लोग, हमारे समाज के नागरिकों की बेटी, दामाद या ससुराल या माता-पिता के जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या या किसी भी प्रकार के प्रश्न को हल करने के लिए उनके पास जाते हैं - जहां एक दबगर जाति के सदस्यों को, यदि कोई विवाद है, तो समस्या के समाधान के लिए "22 एसोसिएशन दबगर समाज पंच" जिसमें 10-11 सदस्य या 1- 2 सदस्य समाधान के लिए पहुंचते हैं। किसी भी समस्या और सवाल का समाधान इस पंच के माध्यम से मिलता है और दबगर समाज के लोगों को इस इनके फैसले से राहत मिलती है. इस पंच के कारण हमारे समाज के लोगों को किसी भी स्थिति का समाधान मिल जाता है।

भाषा

- दबगर समाज की भाषा के बारे में क्या कहें?

- दबगर समाज की बोली ही उनकी पहचान है। अगर कोई यह जांचना चाहे कि वह दबगर जाति का है या नहीं, तो उसका भाषण सुनते ही पता चल जाएगा कि यह व्यक्ति दबगर है.

- पहले के समय में दबगर जाति के लोग अलग-अलग भाषाएं बोलते थे। अब भी अलग-अलग राज्यों में रहने वाले लोग अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं।

- गुजरात में रहने वाले दबगर गुजराती भाषा बोलते हैं। कुछ लोग हिन्दी भी बोलते और समझते हैं। मारवाड़ क्षेत्र में दबगर भी पाए जाते हैं, जो मारवाड़ी भाषा बोलते हैं। लेकिन वहां के अमुक लोग हिंदी भी समझते और बोलते हैं।

- राजस्थान में रहने वाले लोग हिन्दी बोलते हैं। वहां कुछ लोग गुजराती भी समझते हैं.और बोल भी रहे हैं. दक्षिणी उत्तर प्रदेश में रहने वाले दबगर लोग व्रज भाषा बोलते हैं। जबकि पूर्व में रहने वाले दबगर लोग अवधी भाषा बोलते हैं। इस प्रकार, विभिन्न राज्यों में रहने वाले लोग विभिन्न भाषाओं का उपयोग करते हैं।

- दबगर समाज के लोगों की वाणी मीठी मीठी शहद के समान होती है। उनकी भाषा दिल को छू जाती है. वे कभी भी ऐसी भाषा नहीं बोलते जो किसी को आपत्तिजनक लगे।

पेशा

- दबगर समाज में लोग व्यवसाय की दृष्टि से, निचली जाति के व्यवसाय-समूह में बंटे हुए हैं।दबगर समाज के लोग,चमार जाति के लोगों से बैल-बकरी का कच्चा खाल खरीदते हैं और एकत्र

करते हैं. इसके बाद यह एकत्रित खालों को थोक विक्रेताओं को बेच देते हैं। इस दबगर समुदाय के लोगों का मुख्य व्यवसाय मवेशियों की खाल का व्यापार करना है। ताकि अपना भरण-पोषण करने के लिए पैसे कमाएँ। लेकिन यह पेशा आजकल दबगर जाति के लोगों द्वारा कम या बंद कर दिया गया है।

यह चमड़े का व्यापार है जो हिंदू धर्म में किसी भी जाति को निम्न जाति का दर्जा देता है। फिलहाल दबगर समुदाय के लोगों ने चमड़े का कारोबार बंद कर दिया है.और अब महिलाएं सिलाई का काम ज्यादा करती हैं और हर तरह के ब्लाउज़ सिलती है। दबगर समाज की महिलाओं की इस कला की सराहना गांव-गांव तक होती है।

- हमारे समाज के लोग पहले के समय में बीड़ी बनाने के लिए भी प्रसिद्ध थे, और हमारे समाज के लोग छाते बनाने और बांधने के लिए भी प्रसिद्ध हैं। वे भगवान, माताजी के फोटो-फ्रेम और फोटो बनाने और मढ़ी देने के लिए भी प्रसिद्ध हैं। हमारे समाज के लोग पहले से ही वाद्य यंत्र बना रहे हैं।और अब भी वे लोग संगीत वाद्ययंत्र बनाकर बेच रहे हैं।

- यूं तो कारोबार के लिहाज से दबगर समाज के लोग किसी भी काम में पिछड़े नहीं हैं। अंत में, वह कटलरी की दुकानों पर बैठकर अपना जीवन यापन करता है। कहते है कि...
- "मिट्टी से भी पैसा पैदा करना आना चाहिए!"

- दबगर जाति के लोगों में व्यापार बहुत होता है। पैसे कैसे

कमाएं?

- क्या करना चाहिए ताकि बिजनेस चलता रहे?

- क्या रखेंगे या बिजनेस करेंगे?

- ग्राहक से कैसे बात करें?

ये सभी हुनर उन लोगों में भरपूर होते हैं. ग्राहकों का स्वागत भगवान का रूप मानकर किया जाता है। और उनके इसी मधुर स्वभाव के कारण उनका व्यवसाय, दुकान आदि आय के स्रोत चलते रहते हैं और उन्नति करते हैं।

स्वभाव

- दबगर समाज के लोगों का स्वभाव कुछ अलग होता है दोस्तों!

- जिस तरह सभी सब्जियों में आलू मिलाया जाता है, उसी तरह दबगर समाज के लोग दुनिया के किसी भी हिस्से में जाएं, आलू की तरह फिट बैठ जाते हैं। दबगर समाज के लोग एक-दूसरे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

- जिस तरह गुलाब के फूलों का एक गुच्छा पूरे बगीचे को सुगंधित कर देता है, उसी तरह अगर पूरे गांव में एक ही दबगर का घर हो तो पूरा गांव सुगंधित हो जाता है।

 - दबगर समाज का हर परिवार ऐसे रुढ़िवादी संस्कारों से ओत-प्रोत है कि वहां का हर सदस्य बुजुर्गों को भगवान मानकर उनकी पूजा करता है और उनकी सेवा करता है। लेकिन वह उन लोगों का सम्मान करते हैं जो उनसे छोटे हैं। और
 - छोटे बच्चों को भी पर्याप्त प्यार और स्नेह देते हैं। वे अपने बच्चों के भविष्य के लिए रात-दिन एक कर देते हैं और अपने बच्चों को उनका उज्ज्वल भविष्य बनाने और उन्हें समझने का पहला मौका देते हैं।

दबगर समाज की एक विशेषता उनमें डाले गए संस्कार हैं। यह वाकई सराहनीय है. क्योंकि आज तक का रिकॉर्ड है कि दबगर समाज के किसी भी युवा ने कभी भी अपने माता-पिता को बोझ समझकर बुढ़ापे में उन्हें वृद्धाश्रम में नहीं रखा, बल्कि भगवान की तरह पूरे दिल से उनकी सेवा की है। जबकि अन्य जाति के लोग काम न होने के कारण अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ देते थे, लेकिन आज तक किसी दबगर युवक के मन में ऐसा कोई गलत विचार नहीं आया। किसी भी छोटी-बड़ी समस्या का समाधान परिवार में सभी मिलजुल कर करते हैं। लेकिन कभी अपने माता-पिता को छोड़ने के बारे में नहीं सोचा.

"धन्य है इस गांव जैसे दबगर समाज की पहल।

स्वागत

- गुजराती साहित्य के कवि दुला काग (दुलभाया काग) जिन्हें हम कवि काग के नाम से जानते हैं। जिनके मजेदार वाक्य हैं:

- " હેજી મારા આંગણિયા પૂછીને

- જે કોઈ આવે રે.
- આવકારો મીઠો આપજો રે લોલ."

- "हेजी मेरा आँगन पूछ रहे हैं।"

- जो भी आये.
- स्वागत है प्रिय लोल।"

- इस कविता में कवि ने क्या खूब कहा है कि, "अगर कोई मेरे आंगन में आए तो उस आंगन में आए मेहमान का मधुर स्वागत करना और उसे मेरे घर भेजना और उसका मधुर स्वागत करना."

यह पंक्ति मैंने इसलिए प्रस्तुत की है क्योंकि दबगर समाज के लोगों का आतिथ्य सत्कार भी इसी प्रकार का होता है।

-अतिथि देवो भव।
- दबगर समाज के लोग अतिथि को भगवान मानते हैं। इस समाज के लोग अतिथि की सेवा उसी हृदय से करते हैं जैसे कोई भक्त भगवान की करता है। वह अपने घर आए मेहमान के साथ दयालुता से पेश आता है। और मेहमान की सेवा एक छोटे बच्चे

की तरह करती है।

 - इस समाज के लोग सड़क पर किसी अजनबी का स्वागत "आओ", "बैठो", "पड़ोसी" जैसे मीठे शब्द कहकर करते हैं। ऐसे हृदयस्पर्शी मधुर वचन सुनने मात्र से अतिथि प्रसन्न हो जाता है और दबगर समाज के लोगों से मिले अपार प्रेम, सम्मान और स्नेह से उसका हृदय भर जाता है। और फिर उसके मन में आता है कि "मैं फिर से उसके घर मेहमान बनूंगा।"

 - "जहाँ मिठास नहीं होता, वहाँ चींटियाँ नहीं आती।"

 -कहा जाता है कि जहां मिठास नहीं, वहां कीड़े नहीं होते. क्योंकि कीड़े, मक्खियाँ आदि वहीं पाए जाते हैं जहाँ मिठास होती है। और दबगर समाज के लोगों की तो बात ही क्या करें. अगर उनके दिल में मिठास है तो वो उनकी बातों में है. उनकी वाणी मधुर, मधुर और आने वाले अतिथि के प्रति हृदयस्पर्शी अनुभूति का संचार करने वाली होती है।

पोशाक

- पहनावा हमारी विशिष्ट पहचान है।

 - दबगर समाज की महिलाएं मुख्य रूप से गुजराती साड़ी पहनती हैं। उनकी संस्कृति साड़ी में ही निहित है। मान-मर्यादा, मर्यादा, गरिमा, खूबसूरती- इन सबको ध्यान में रखकर महिलाएं

कपड़े पहनती हैं। और पुरुष शर्ट-पैंट पहनते हैं. वे अलग-अलग वैरायटी और डिजाइन की शर्ट पहनते हैं। जबकि कुछ घर्दा पुरुष लबादा और लहंगा पहनते हैं। लेकिन अब ज्यादा लोग पैंट-शर्ट ही पहनते हैं.

- दबगर समाज की महिलाएं ब्लाउज सिलने के लिए मशहूर हैं। अलग-अलग तरह और डिजाइन के ब्लाउज सिलवाए जाते हैं। यह एक खूबसूरत कला है. और वह खुद भी अलग-अलग डिजाइन वाले ब्लाउज पहनती हैं। और महिलाएं बड़ों के मान-सम्मान की रक्षा के लिए शालीन कपड़े पहनती हैं।

- लड़की शादी या किसी कार्यक्रम में कोई ड्रेस पहनती है। और दबगर समाज के साथ-साथ घरों की महिलाएं, पुरुष, लड़कियां और लड़के अगर किसी कार्यक्रम में जाते हैं तो उनका पहनावा ऐसा होता है कि क्या कहें? सभी ने अच्छे कपड़े पहने और बहुत अच्छे लग रहे थे - तैयार होकर घूम रहे थे, व्यक्तित्व ही कुछ अलग है।

आहार /खाद्य

- भोजन सभी के लिए एक समान है। ज्यादातर लोग हरी सब्जियां, दाल, चावल, दाल, रोटी, रोल आदि खाना पसंद करते हैं।

- मैं दबगर समाज की बेटी हूं। तो मैं बता सकता हूं कि हमारे

समाज में भोजन से कौन ज्यादा वंचित है। यह थोड़ा शर्मनाक है लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि क्या हो रहा है? दबगर समाज के कुछ लोग शुद्ध शाकाहारी हैं और कुछ मांसाहारी हैं। हमारे समाज के अधिकांश लोग स्वामीनारायण संप्रदाय के अनुयायी हैं। तो कुछ लोग प्याज-लहसुन भी नहीं खाते. शादी समारोह में भी इन लोगों के लिए अलग से खाना रखा जाता है. जब हमारे बीच किसी मौके या किसी शुभ अवसर पर नॉनवेज रखा जाता है.

- चूंकि इस समाज के लोग नौकरीपेशा हैं, इसलिए सुबह उठकर चाय-नाश्ता करके अपने काम में लग जाते हैं। फिर 1 बजे से 2 बजे के बीच उनके लंच का समय हो जाता है। जिसमें वे सब्जियां-रोटली या ब्रेड खाते हैं. दिन भर थककर शाम यानी रात को आराम से खाना खाते हैं. रात के खाने में वे हरी सब्जियां, रोटी, दाल-चावल आदि खाते हैं।

- अब आधुनिक समय में समय के साथ चलते रहना चाहिए। लेकिन हमारे समाज में केवल 30% लोग ही बदले हैं। और 70% लोग पहले की तरह ही जी रहे हैं. आज भी वो लोग खाने में नॉनवेज और ड्रिंक में शराब के आदी हैं। जो कि एक गलत आदत है. कुछ लोगों को हर दिन खाने-पीने की आदत होती है।

- अभी तो हर कोई पढ़ा-लिखा है। इसलिए पढ़े-लिखे लोगों को समझना चाहिए कि ये बात गलत है.

- दबगर समाज की "22 एसोसिएशन दबगर समाज पंच" ने इस

बात को ध्यान में रखते हुए इस उद्देश्य के लिए एक कानून जारी किया है। ताकि हमारे समाज की ये आदत सुधर जाये. क़ानून में था कि किसी भी शुभ अवसर पर नॉनवेज नहीं रखा जाना चाहिए. लेकिन किसी ने भी इस कानून का सम्मान नहीं किया और इस कानून का उल्लंघन समाज के सभी लोगों ने किया। और फिर इस बारे में कोई फैसला नहीं हुआ.

-खाना-पीना पहले की तरह शुरू हो गया।और यह अभी भी चल रहा है.मैं किसी भी फैसले की भीख माँगता हूँ। यदि आपको लगता है कि मैंने जो किया वह सही है, तो मुझे आशा है कि आप इसके बारे में सोचेंगे और हमारे समाज की भलाई के लिए कोई निर्णय लेंगे। क्योंकि मेरा मानना है कि अगर आपका समाज मद्द-पान से मुक्त हो जाए तो वह बहुत ऊपर उठ जाएगा, ज्यादा समय नहीं लगेगा। हमारा समाज जल्द ही सभी को ज्ञात हो जाएगा।

- "अब कुछ बुरी आदतों को सुधारना जरूरी है

त्योहारों का उत्सव

- त्योहारों को मनाने के लिए दबगर समाज के सभी लोग एक साथ आते हैं और मिलकर योजना बनाते हैं, सभी एक साथ आते हैं और काम को अलग-अलग बांट लेते हैं और सभी के सहयोग से त्योहार मनाने का काम शुरू करते हैं। और सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कोई भी त्यौहार हो, बड़ा हो या छोटा,

हर कोई अपना कीमती समय निकाल करके उसे मनाने के लिए इकट्ठा होता है।

- "दबगर समाज के लोगों की एकता कैसी है!"

- किसी भी काम या अवसर या त्योहार के लिए हमेशा तैयार रहें। दाहोद, लूनावाड़ा, गोधरा जैसे गांवों में "वसंतपंचमी" त्योहार बहुत लोकप्रिय है। उनकी शोभायात्रा देखने और उनके दर्शन करने के लिए दूर-दूर से ग्रामीण उत्साहपूर्वक आते हैं। दबगर समुदाय के लोग नवरात्रि, दिवाली, जन्माष्टमी, वसंत पंचमी आदि सभी त्योहार मनाते हैं।

- ताजा उदाहरण हमारे सामने है। दबगर समुदाय के लोगों ने अयोध्या मंदिर को एक खूबसूरत *नगाड़ा* दान किया. जिसके लिए 25 से 30 कारीगरों ने दिन-रात अथक परिश्रम किया। और 450 किलो और 56 इंच चौड़ा नगाड़ा बनाया।और इसे बनाने में 8 लाख रुपए खर्च किए। नगाड़ा के निर्माण के लिए जो योगदान चाहिए था, जो सामान चाहिए था, सबने बाँटा और देखभाल की। और फिर नगाड़ा की बारात गांव-गांव घूमी और सभी लोगों ने दबगर समाज द्वारा दिए गए इस खूबसूरत शानदार उपहार के लिए अपना समय समर्पित कर दिया ताकि सभी लोग इस भेंट (उपहार) का दर्शन कर सकें, पूरी अयोध्या दबगर समाज के संगीत से गूंज उठेगी जब अयोध्या के राम मंदिर में बजेगा. जो दबगर समाज के लोगों के लिए गर्व की बात है। उन्होंने अपनी कला और कौशल का उपयोग एक शानदार काम में, यानी एक सुंदर हाथ से बना शानदार नगाड़ा

बनाकर, भारत में अपनी कला और कौशल को प्रसिद्ध कर दिया है।

- किसी भी त्योहार में अगर आप अपना काम-धंधा छोड़कर पूरा दिन नहीं निकाल पाते हैं तो अपना कीमती समय निकालकर इन त्योहारों में अपना योगदान देकर अपना योगदान दें। छोटे बच्चे सभी को एक साथ देखकर काफी उत्साहित हो रहे हैं. बच्चों की किलकारियाँ, पुरुषों की किलकारियाँ, महिलाओं की बातें, दरवाज़ों की थपथपाहट और खुशनुमा माहौल बहुत सुंदर लगते हैं। ऐसा उल्लासपूर्ण माहौल त्योहारों के कारण ही होता है। ऐसे में व्यस्त दिनों में हर कोई अपने काम में व्यस्त रहता है। त्योहारों के चलते हर कोई एक-दूसरे के लिए समय निकाल ही लेता है। एक दूसरे से मिलो। त्यौहार खुशियों का खजाना होते हैं।

वर्तमान स्थिति

- भारत में दबगर समाज की जनसंख्या करीब 1.5 लाख हैं। दबगर समाज अलग - अलग क्षेत्रों में फैला है, जिनमें कुछ उत्तर प्रदेश, कुछ बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र आदि राज्यों में जाकर बस गये हैं।

-

- गुजरात में रहने वाले दबगर समाज के लोगों में परमार, राठौड़, मोदी, छत्रीवाला, दबगर जैसी वंशावली उपनाम हैं। जबकि पड़ोसी राज्य राजस्थान में रहने वाले लोगों की तीन

वंशावली हैं। जिनमें चौहान, देवड़ा और परमार शामिल हैं। ये तीनों कुल क्षत्रिय कुल के हैं। मुख्य रूप से जोधपुर में चौहान, उदयपुर में देवड़ा और अजमेर में परमार थे। गुजरात में रहने वाले दबगर काफी हद तक स्वामीनारायण पंथ का पालन करते हैं।

- "परिवर्तन प्रकृति का नियम है।"

- पहले के समय में एक समय था जब दबगर समुदाय को सरकारी अधिकारियों द्वारा मान्यता नहीं दी जाती थी। ऐसे में दबगर समाज के लोगों को आवास, राशन कार्ड आदि पाने के लिए काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। लेकिन हमारी जाति के युवाओं ने संघर्ष और मेहनत करके आज हमारी पहचान बनाई है। जो सराहनीय है.

- आज दबगर समाज के लोग किसी भी कार्य में जी जान लगा देते हैं और उस कार्य को पूरा करने में पूरा सहयोग देते हैं।

- मौजूदा स्थिति पर नजर डालें तो दबगर समाज के लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है। पहले दो पहर खाना मिलना भी बहुत मुश्किल होता था. अब बदलते वक्त के साथ दबगर समाज के लोग भी बदल गए हैं। आधुनिक समय में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां दबगर ने उड़ान न भरी हो, अब “दबगर के लोग आकाश में सितारों की तरह चमक रहे हैं।”

- पहले के समय में चमड़ा उद्योग के व्यापार के कारण लोग

हमारे समाज को पिछड़ा वर्ग समझते थे। वहीं अब दबगर समाज के लोगों ने यह धंधा बंद कर दिया है. केवल कुछ ही लोग होंगे जो यह उद्योग कर रहे होंगे और बाकी वे भी बंद हो जायेंगे। अब प्राय: सभी दुकानें चल रही हैं। और सभी परिवार एक साथ खुशी-खुशी और प्रेमपूर्वक रहते हैं।दबगर समाज के लोगों के बीच बहुत प्यार है.

- "दबगर समाज - एक परिवार"

- इसी आदर्श वाक्य के साथ सभी लोग एक-दूसरे के साथ प्रेम से व्यवहार करें और हर व्यक्ति ऐसे रहें जैसे वह एक परिवार का हो। यह हमारा दबगर समाज था, जो हमारे समाज में था और अब भी है।

मैंने अपने विचारों में सब कुछ व्यक्त कर दिया है. अब मैं अपनी तरफ से यानि दबगर समाज की बेटी होने के नाते एक निवेदन करती हूं।

इतना समझ लो:-

-मुझे गर्व है कि मैं दबगर समाज की बेटी हूं। लेकिन मुझे दुख भी है कि हमारे समाज में ऐसा क्यों है?

- जब बच्चा पैदा होता है तो जलेबी बांटी जाती है, जबकि बच्ची

पैदा होने पर चकले बांटे जाते हैं.

- "बेटा तुलसी का फूल होता है।" -

- यह कहावत लोग बोलने के लिए कहते हैं। लेकिन असल में बेटी को बोझ समझा जाता है. बेटी, दुश्मन को भी मत देना. "अरे, तुमने पिछले जन्म में क्या गलती की थी, जो तुमने अपने घर में बेटी को जन्म दिया!" - बेटी पैदा होने पर समाज के लोग इस तरह की बातें कर रहे हैं। यह हमारे समाज में बेटी की हालत है। जन्म लेते ही मार दिया गया. हमारे समाज में बेटी को 'मौत का कुआं' और 'परकी जमा' माना जाता है।

- "लेकिन बेटी को परकी जमा किसने कहा?

- वह पूरे घर का ढक्कन है,
- भगवान ने उसे ऐसी बुद्धि दी है,
- कि उनका जाना सब पर भारी है।

- हमारे समाज में बेटे और बेटियों में बहुत भेदभाव किया जाता है। बेटे रात के 12 बजे तक राजाओं की तरह खुलेआम घूमते हैं जबकि बेटियां को बाहर जाने की छुट्टी नहीं। वर्तमान समय में हमारे समाज के 30% लोगों की सोच बदल गयी है लेकिन 70% लोगों की सोच आज भी वैसी ही है जैसी पहले थी।

- मुख्य बात यह है कि मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे समाज

के लोगों की सोच यह है कि हमारे समाज की बेटियों को शिक्षित नहीं किया जाना चाहिए। या फिर सिखाया ही नहीं जाना चाहिए. और अगर बेटी पढ़ना चाहती है तो 10वीं या 12वीं कक्षा ही काफी है। 12वीं कक्षा के बाद शायद ही कुछ लड़कियों को कॉलेज जाने या किसी क्षेत्र में आगे बढ़ने की इजाजत मिलती है। फिर इतनी पढ़ाई करने के बाद उसे सिलाई और ब्यूटी पार्लर सिखाया जाता है। और इसमें आगे बढ़ने की सलाह देते हैं.

- समाज की बेटियों को नहीं पढ़ाना चाहिए। क्योंकि पढ़ी-लिखी बेटियां घर, परिवार या बच्चों की देखभाल नहीं कर सकतीं। ये विचार ग़लत हैं. ऐसी ही सोच के कारण हमारे समाज में लोग अपनी बेटियों को नहीं पढ़ाते। ऐसा नहीं है कि सभी एक जैसे होते हैं, आज के समय में लड़कियों को पढ़ाना जरूरी है, जो लोग इस बात को समझते हैं वही पढ़ाते हैं। लेकिन बाद में ऐसे अच्छे विचार वाले पछताते हैं। और सोचता है

- अपनी बेटी को सिखाएं कि क्या करना है?

- क्योंकि पढ़ी-लिखी बेटी को कोई घर की बहू बनाने को तैयार नहीं होता। क्योंकि हमारे समाज में लोग घरेलू महिला नहीं बल्कि काम करने वाली नौकरानी चाहते हैं." बात थोड़ी कड़वी है लेकिन सच है.

मेरा प्रश्न है -

"क्या हम बेटियों को आज़ादी से पढ़ने का हक़ नहीं है?"

 - एक शिक्षित बेटी दो परिवारों को सहारा देती है। हर कोई यह क्यों भूल जाता है? दोनों परिवारों का भविष्य बेटी के हाथ में है। लोग यह क्यों भूल जाते हैं कि एक पढ़ी-लिखी महिला कितना समझती है? एक बच्चे का भविष्य तब बर्बाद नहीं होता जब उसकी माँ शिक्षित हो। कौन कहता है कि पढ़ी-लिखी लड़कियाँ घर नहीं संभाल सकतीं। यकीन मानिए तो आप देखेंगे कि आज की लड़कियां घर और नौकरी के बीच संतुलन बनाए रखने की हिम्मत रखती हैं - आज की लड़कियां किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। हमारे भारत का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां बेटियों ने अपनी उड़ान न भरी हो। तो हमारे समाज में ऐसा क्यों हो रहा है?

 - "आप हमारे समाज में उड़ने की चाहत रखने वाली लड़कियों के पंख क्यों काटते हैं?"

 - यदि आप वास्तव में नहीं चाहते कि वे उड़ें तो उनके पंख न काटें। उनकी आलोचना मत करो.

 - "22 एसोसिएशन दबगर समाज पंच" हमारे समाज में पढ़ने वाली बेटियों को आगे पढ़ने के लिए नई-नई प्रतियोगिताएं और सम्मान सभाएं आयोजित करती रहती है। जिससे पढ़ने वाली बेटियों को और अधिक प्रोत्साहन मिलता है। यदि हमारे समाज के पंच , शिक्षित बेटियों के लिए ऐसा कर सकते हैं तो मेरी समाज के छोटी मानसिकता वाले लोगों से प्रार्थना है कि मेरे जैसी हमारे समाज की कुछ बेटियां होंगी जो इस अवसर के लिए

समाज से संघर्ष कर रही होंगी। लेकिन आख़िरकार वह असफल हो जाती है और हिम्मत हार जाती है और दुनिया के साथ घर चली जाती है। तो यह हार किसी महिला का नहीं बल्कि पूरे समाज का है। लेकिन अब से ऐसा नहीं होगा, अगर आप हमारी बात समझेंगे तो यह आवाज अकेले मेरी नहीं है बल्कि दबगर समाज के हर उस व्यक्ति की है जो इस बेटी की आवाज है जो आगे पढ़ना चाहती है, कुछ बनना चाहती है, कुछ करना चाहती है।

- हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप हमें समझेंगे!

- हम कुछ करना चाहते हैं. हम अपना और अपने माता-पिता का नाम रोशन करना चाहते हैं।' हम चाहते हैं कि हमारे समाज यानी दबगर समाज की बात पूरे भारत में सुनी जाए।

- बेटियां पढ़ेंगी तो घर पर। यदि हमारा समाज शिक्षा के मामले में पिछड़ गया तो नहीं रहेगा। हमारे समाज में लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं इसलिए उनके विचार पिछड़े हुए हैं। और नौकरियाँ भी बहुत कम लोग करते हैं जिसके कारण आज भी हमारा समाज पिछड़ा हुआ है।

-मुझे उम्मीद है कि अन्य जातियों की तरह बेटियों को पढ़ाकर क्षेत्र के सपने पूरे होंगे। यदि हमारे समाज के लोग अपनी सोच बदलें और हमारे समाज की बेटियों का समर्थन करें तो मुझे उम्मीद है कि हमारे समाज की बेटियां हमारे समाज का नाम रोशन करेंगी। इसलिए इस सहयोग में कुछ सहयोग दें. हम

आपसे बहुत आशा कर सकते हैं!

- पहले लड़कियों को पढ़ाया नहीं जाता था लेकिन अब लड़कियों को पढ़ने का मौका दिया जाता है। फिर भी कई जगहें अभी भी लड़कियों को पढ़ने के अवसर से वंचित करती हैं। ऐसा मत करो और बेटियों को पढ़ने दो और आसमान में उड़ने दो।

- આપણાં સમાજમાં જે ચાલે છે. તેનું મેં વર્ણન કર્યું છે. જો મારાંથી કંઈ વધારે બોલાઈ ગયું હોય તો મને માફ કરજો. અને આટલું જ કહેવાં માંગુ છું કે દીકરીઓનેસમજો કારણ કે હું એક દીકરી જ છું. બહું આશાઓ છે. અમને કે અમે કંઈક કરીએ અને સમાજ નું નામ રોશન કરીએ અને સમાજ માટે પણ કંઈક કરી શકીએ....

- हमारे समाज में क्या चल रहा है. मैंने इसका वर्णन किया है. अगर मैं ज्यादा बोल गया तो मुझे माफ कर देना. और मैं बस यही कहना चाहती हूं कि लड़कियां समझती हैं क्योंकि मैं एक बेटी हूं। बहुत उम्मीदें हैं. आइये कुछ करें और समाज का नाम रोशन करें और समाज के लिए भी कुछ कर सकें।

लेखक:-

देवड़ा तनिषा कनुभाई (कपड़वंज, जिला- खेड़ा, गुजरात)

परिणाम प्रकाशन तिथि-29 जून 2024

अनुलग्नक:-

पुरस्कार राशि प्रदान करने की सूचना:-

अखिल भारतीय दबगर समाज (भारतवर्ष)

अखिल भारतीय प्रतियोगिता (दबगर समाज)

अपने दबगर समाज के बच्चों के लिए, कुछ प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन आयोजन किया गया था, जिनकी अंतिम तिथि 30 अप्रैल 2024 थी. निर्णायक मंडल के द्वारा किए गए मूल्यांकन के आधार पर, प्रतियोगिता का परिणाम निम्नलिखित रूप से घोषित किए गए थे. इनकी पुरस्कार राशि इन्हें भेजी जा चुकी है.

निबंध प्रतियोगिता:--

1.प्रथम राष्ट्रीय विजेता- देवड़ा तनिषा कनुभाई (कपड़वंज, जिला- खेड़ा, गुजरात) -पुरस्कार राशि- ₹5000

2.द्वितीय राष्ट्रीय विजेता - राहुल कुमार - चकमहिला चौक, सीतामढ़ी ,बिहार) -पुरस्कार राशि- ₹4000

3.तृतीय राष्ट्रीय विजेता- अनिष्का -(खादेपुर,कानपुर,उत्तर प्रदेश) -पुरस्कार राशि- ₹3000

4.राज्यस्तरीय विजेता- वैष्णवी कुमारी-(खादेपुर, कानपुर , उत्तर प्रदेश) -पुरस्कार राशि- ₹1000

उपर्युक्त विजेताओं की कुल पुरस्कार राशि(13000 रुपये) सितंबर 2024 में भेज दी गई है.

प्रथम विजेता को, पुरस्कार राशि और मेडल, शैक्षणिक समारोह , कपड़वंज (गुजरात) में प्रदान किया गया.

शेष को UPI के माध्यम से भेजा गया.

अखिल भारतीय दबगर समाज (भारतवर्ष)
दिनाँक- 17.11.2024

नोट-यह लेख, लेखक के निजी अनुभव और निजी विचार पर आधारित है.परंतु बहुत हद तक सटीक और सच है. यह महज एक निबंध ही नहीं है, बल्कि दबगर समाज का एक दस्तावेज भी है.

प्रस्तुतकर्ता
हेमेंद्र 'मुखर'
लेक्चरर
राजकीयकृत गोविंद इंटर कॉलेज,
गढ़वा, झारखंड

Mob- 7759047374